गाँधी पश्चात शांति आंदोलन

प्रो. अनिल धर

कॉपीराइट : जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं (राजस्थान)

ISBN : **978-93-83634-16-3**

लेखक : प्रो. अनिल धर

संस्करण : 2015

मूल्य : रू. 350

प्रकाशक : जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं - 341 306
फोन : 01581-226110

मुद्राणालय : मैसर्स पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर

जो एक क्रांतिकारी कदम के रूप में [illegible]

अहिंसा में छोटे-छोटे संकल्पों द्वारा व्यक्ति के [illegible]

रखा गया, जो कि अहिंसा का प्राण है। विश्व शांति की दिशा में [illegible]

द्वारा कई अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन कर विश्व [illegible]

करने में सहायता दी। सामाजिक संरचना निर्माण दिशा में [illegible]

इनके प्रयास उल्लेखनीय हैं। मैंने सोचा यदि उपर्युक्त अहिंसक प्रयोगों [illegible]

एक जगह व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया जाए तो अहिंसा के प्रयोग [illegible]

दिशा निर्धारित करने में सहायता मिलेगी। इन प्रयोगों की सफलता/

विफलता के क्या कारण रहे और उनसे भावी अहिंसक प्रयोगों को [illegible]

मिल सकती है, यह प्रयोग कहाँ तक पर्याप्त माने जा सकते हैं [illegible]

है? इत्यादि अनेक बिन्दु हैं, जिनका अध्ययन अहिंसा के विकास [illegible]

अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत ग्रंथ इस संदर्भ में एक नया प्रयास है। [illegible]

प्रस्थान अहिंसा के प्रायोगिक उपक्रम को नई दिशा दे पायेगा [illegible]

की सफलता असंदिग्ध है।

प्रस्तुत ग्रंथ के विषय के चिन्तन तथा चयन हेतु डॉ. रामजी सिंह [illegible]

कुलपति, जैन विश्वभारती संस्थान व डॉ. दशरथ सिंह जी, पूर्व विभागाध्यक्ष [illegible]

प्रो. बच्छराज दूगड़, पूर्व विभागाध्यक्ष अहिंसा शांति विभाग आदि [illegible]

अहिंसा एवं शांति के मौलिक चिन्तन ने एक रचनात्मक [illegible]

प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। [illegible]

श्री रतनलाल कोठारी, पूर्व कुलसचिव जैन विश्वभारती संस्थान [illegible]

जिन्होंने मुझे अहिंसा एवं शांति के अध्ययन हेतु प्रेरित किया।

मैं गुरुदेव श्री तुलसी को अणुव्रत-अनुशास्ता के रूप में [illegible]

ज्योति-शिखा मानता हूँ जो करोड़ों मानवों के हृदय-सम्राट [illegible]

में अणुव्रत-आन्दोलन के विशेष सन्दर्भ में सम्मिलित [illegible]

गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। अणुव्रत अनुशास्ता के प्रति [illegible]

को अभिव्यक्त करना नैतिक ज्योतिपुंज, विशाल हृदय [illegible]

दीपक दिखाने जैसी भयंकर भूल करना होगा। श्रद्धेय आचार्य [illegible]

का वात्सल्यपूर्ण दिशा-निर्देशन मुझे सदा सहज उपलब्ध रहा [illegible]

[illegible] को सतत प्रेरणा एवं पाथेय मेरे पथ [illegible] मुझे प्रदान [illegible] आशीर्वाद मेरे जीवन [illegible] विषयों पर चर्चा करके मेरे चिन्तन [illegible] योगदान है। समणी चारित्रप्रज्ञा, कुलपति [illegible] निर्देशन एवं पाथेय इस ग्रंथ के प्रकाशन [illegible] जी, समणी स्थितप्रज्ञाजी, समणी [illegible] आदि ने समय-समय पर सहयोग व [illegible] प्रति कृतज्ञ हूँ।

[illegible] ने अपने सौन्दर्यबोध व अपनी गति का भरपूर [illegible] ग्रंथ को तैयार किया, उनके प्रति अपना आभार [illegible] व्यक्तियों का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने अपने [illegible] में अभिवृद्धि करने में महत्त्वपूर्ण सहयोग [illegible] अज्ञात सहायक तत्वों का कृतज्ञ हूँ जो [illegible] के उस क्षण के प्रति समर्पित करते हुए [illegible] जैन विश्वभारती संस्थान में छात्र के रूप में [illegible]

-प्रो. अनिल धर

विभागाध्यक्ष- अहिंसा एवं शांति

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

अध्याय-1 : गाँधीजी के अहिंसक प्रयोगों का परिचय 01-36

- ❖ भूमिका
- ❖ गाँधीजी का योगदान
- ❖ अहिंसा का प्रयोग
- ❖ सत्याग्रह - आन्दोलनात्मक, रचनात्मक, मूल्य परिवर्तनात्मक प्रक्रिया
- ❖ अहिंसा के प्रयोग - दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह, भारत में अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, व्यक्तिगत व कौटुम्बिक सत्याग्रह, सत्याग्रह आन्दोलन, उपवास
- ❖ मूल्यांकन

अध्याय-2 : सर्वोदय आन्दोलन 37-67

- ❖ अर्थ
- ❖ सर्वोदय का दर्शन
- ❖ सर्वोदय दर्शन के आधारभूत तत्त्व - सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, आत्मत्याग, सर्वजनहिताय, वर्ग-संघर्ष का विस्तार अनुचित, साधन-शुद्धि, कर्त्तव्यों का पालन।
- ❖ सर्वोदय समाज - कार्य एवं उद्देश्य, व्यवस्था का स्वरूप
- ❖ सर्वोदय आन्दोलन का उद्‌भव व विकास
- ❖ भूदान यज्ञ का उद्देश्य - व्यक्तिगत स्वामित्व का निराकरण, प्रेम और अहिंसा की शक्ति का निर्माण, जोतने वाले की जमीन, हृदय-परिवर्तन द्वारा शासन-मुक्त, शोषण-मुक्त अहिंसक समाज रचना, समाज परिवर्तन हेतु, अर्थ रचना में क्रान्ति हेतु, जीवन की आधार भूमि।
- ❖ ग्रामदान - अर्थ एवं उत्पत्ति
- ❖ ग्रामदान दर्शन एवं उद्देश्य - सहयोगशील एवं सन्तुलित समाज का निर्माण, सामाजिक मूल्यों और विचारों में परिवर्तन, समाज में नैतिकता की प्रतिस्थापना,